ISBN : 978-81-687357-2-9

भिनकराम-पदावली

(संगृहीत एवं संशोधित)

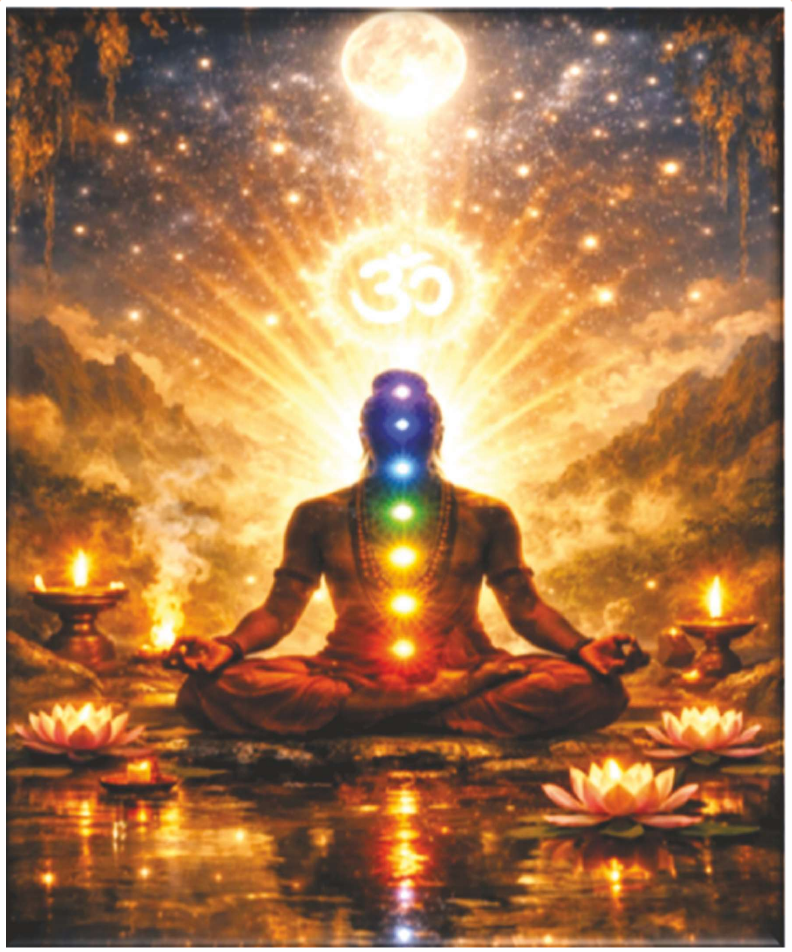

प्रो. सूर्यदेव प्रसाद

भिनकराम–पदावली
(संगृहीत एवं संशोधित)

प्रो. सूर्यदेव प्रसाद
सेवानिवृत्त प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, आर.बी.जी.आर. कॉलेज
महाराजगंज, सिवान, बिहार, भारत

Publisher:
Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, India
Ph.: +91 9425210308

भिनकराम-पदावली
(संगृहीत एवं संशोधित)

Year: **2026**
Edition - **01**

संपादक
प्रो. सूर्यदेव प्रसाद
महाराजगंज, सिवान, बिहार, भारत

ISBN : **978-81-687357-2-9**

Copyright© All Rights Reserved to Editor
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original Editor.

Price : Rs. **151/-**

Publisher & Printer:
Aditi Publication,
Opp. New Panchajanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

समर्पण

प्रातः स्मरणीय गुरूवर डॉ. विनोद कुमार सिंह की पावन स्मृति में

पुरोवाक्

विभिन्न संतों की पोथियों से उपलब्ध पदों एवं टेढ़ा (सारन) मठ के संत स्व. छविराम दास जी द्वारा 1956 में प्रकाशित 'भिनक–दर्शन माला' के पदों में एकरूपता और तारतम्यता का अभाव दिखता है, पाठांतर तो है ही– कहीं–कहीं अर्थ की दृष्टि से निरर्थकता भी है। भिनकराम के पदों को देखने से लगता है कि वे बहुत पढ़े लिखे नहीं थे, अधिक से अधिक साक्षर रहे होंगे। उनका ज्ञान अनुभव गम्य था। भक्ति के आवेश में उनके मुख से जो पद्यात्मक शब्द निकले, वे गेय थे। ऐसा लगता है कि उनके शिष्यों में जो साक्षर रहे होंगे, उन्होंने लिपिबद्ध किया होगा, क्योंकि उनके सभी पदों में उनके नाम के पहले 'श्री' लगा है। इससे अनुमान होता है कि उनकी रचनाओं को लिपिबद्ध करते समय शिष्यों ने गुरू के प्रति आदर प्रकट करने के लिए ही 'श्री' का प्रयोग किया है। स्वयं लिपिबद्ध करने की स्थिति में कोई भी रचनाकार अपने नाम के पहले 'श्री' नहीं लगाता। पाठांतर और अन्य त्रुटियों का दूसरा कारण है कि अगली पीढ़ी के संतों ने उसकी नकल कर अपनी–अपनी पोथी बनायी होगी और इसी तरह कई–कई पोथियाँ बनी होंगी। 1978–80 के बीच विभिन्न सरभंगी संतों के मठों में भ्रमण के क्रम में कई हस्तलिखित पोथियाँ मुझे मिली भी है। दुर्भाग्यवश मूल प्रति उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में मुझे संशोधित संस्करण की आवश्यकता महसूस हुई और इसका मैंने प्रयास किया है। कुछ ऐसे पद जो हस्तलिखित संग्रहों में हैं और भिनक दर्शन माला में नहीं हैं– उन्हें सम्मिलित कर लिया गया है। उपलब्ध प्रति में कुछेक पद उनके शिष्यों के हैं और कुछेक पद जिनमें तारतम्यता का अभाव हैं, छोड़ दिए गयें हैं।

साधना और भोजपुरी भाषा की दृष्टि से भिनकराम की महत्ता निर्विवाद है। इसलिए उनकी रचनाओं की मौलिकता को बरकरार रखते हुए संशोधित रूप में उजागर करना ही मेरा लक्ष्य रहा है। इस प्रयास में कितना सफल हुआ हूँ; यह तो विद्वान पाठक ही बताएँगे।

अंत में, सबसे पहले प्रातः स्मरणीय गुरूवर स्व. डॉ. विनोद कुमार सिंह के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे भिनकराम पर शोध करने के लिए प्रेरित किया था। सारन और चंपारन में भिनकपंथी मठों की संख्या सर्वाधिक है–सबका भ्रमण किया। कई मठों से संतों की हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध भी हुईं, किंतु मुझे संतोष नहीं हुआ और काम लटकता गया, फिर ''गृह कारज नाना जंजाला'' में उलझकर रह गया, लेकिन भिनकराम के प्रति मेरे मन में आकर्षण बरकरार रहा। यही कारण था कि कैथी लिपि में लिखित रचनाओं में माथापच्ची करता रहा और रचनाओं को दुरूस्त करता रहा। बीच–बीच में मेरे कुछ शुभचिंतक मित्रों एवं स्नेहीजनों का आग्रह होता रहा कि कम से कम उनके पदों को प्रकाशित करा दूँ, अन्यथा सारी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी। अतः उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ। मित्रवर प्रो. जयनारायण सिंह का ऋणी हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर चंपारन के दर्जनाधिक मठों पर धुमाया। आदरणीय संत शिरोमणि विद्यार्थी जी महाराज और डॉ. जगदीश तिवारी जी के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जो मुझे बराबर कोंचते रहे। इधर लगभग तीन वर्षों से प्रो. अमरनाथ प्रसाद, छपरे से मेरे घर पर आकर पांडुलिपि तैयार कर देने का आग्रह करते रहे। अंततः उनकी जीत हुई, टाईप कराना और प्रुफ देखने का काम भी उन्होंने आसान कर दिया और इस पुस्तक के प्रकाशन का सारा श्रेय उन्हीं को जाता है– इसलिए उनके प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। मैं अपनी बड़ी पोती अदिति पीयूष के भी उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ जिसने पुस्तक प्रकाशित कराने के लिए बराबर आग्रह और हठ करती रही है। अंत में विकास कुमार पाण्डेय (शिक्षक) के भी दिनानुदिन प्रगति की मंगल कामना है, जिन्होंने मुझे पितृवत् आदर के साथ तकनीकी सहयोग तो किया ही, साथ ही बराबर उत्पेरित भी करते रहे।

अभिमत

—प्रो. (डॉ) अमरनाथ प्रसाद
अंग्रेजी विभागाध्यक्ष
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)
Email: anpcpr67@gmail.com

सारण की संत परंपरा भारतीय आध्यात्मिक चेतना की एक समृद्ध और गौरवशाली धरोहर रही है। इस परंपरा में संत कवि बाबा भिनक राम का नाम अत्यंत श्रद्धा और आदर के साथ लिया जाता है। वे केवल एक सिद्ध संत ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि के लोककवि और गहन दार्शनिक भी थे। उनकी रचनाओं में अध्यात्म, लोकजीवन, भक्ति और साहित्यिक सौंदर्य का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है। भोजपुरी भाषा में रचित उनका अमूल्य ग्रंथ ''भिनक दर्शन माला'' हमारी लोक—सांस्कृतिक चेतना की अनुपम निधि है। दुर्भाग्यवश यह ग्रंथ लंबे समय से दुर्लभ रहा है और धीरे—धीरे विलुप्ति के कगार पर पहुँच गया था। ऐसे समय मे प्रो. सूर्यदेव प्रसाद द्वारा इसके संशोधित संस्करण ''भिनकराम पदावली'' का प्रकाशन वास्तव में एक ऐतिहासिक और सराहनीय कार्य है। यह केवल एक पुस्तक का पुनर्प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारी संत परंपरा और लोकधरोहर का पुनर्जीवन है। इसके लिए वे हार्दिक बधाई और साधुवाद के पात्र हैं।

मुझे इस ग्रंथ की प्रूफरीडिंग करने का अवसर प्राप्त हुआ। अध्ययन के क्रम में यह अनुभव हुआ कि बाबा भिनक राम की काव्य प्रतिभा अत्यंत विलक्षण थी। उनके पदों में आध्यात्मिक अनुभूति के साथ—साथ गहन काव्य सौंदर्य और साहित्यिक चेतना विद्यमान है। विशेष रूप से उनके पदों में प्रयुक्त प्रतीक, रूपक और विस्तृत उपमा (Extended Metaphor) अत्यंत प्रभावशाली हैं।

''हरि मदिया मोरा लागल सजनी...'' जैसे पद में संत कवि ने ईश्वर—प्रेम को मदिरा के रूपक द्वारा जिस कलात्मकता से व्यक्त किया है, वह अद्‌भुत

है। यहाँ 'मन' को महुआ, 'तन' को भट्ठी और 'भक्ति' को मदिरा के रूप में चित्रित कर आत्मा और परमात्मा के मिलन की अनुभूति कराई गई है। यह केवल आध्यात्मिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उच्च कोटि का काव्य कौशल भी है। इस पद में प्रारंभ से अंत तक एक ही मुख्य उपमा का विस्तार मिलता है, जो अंग्रेजी साहित्य की "Extended Metaphor" शैली की याद दिलाता है। सामान्यतः ऐसी शैली महाकवि कालिदास, तुलसीदास, शेक्सपियर और मिल्टन जैसे कवियों में देखने को मिलती है, किंतु संत साहित्य में इसका इतना सहज और प्रभावी प्रयोग अत्यंत दुर्लभ है।

भिनकराम बाबा की विशेषता यह है कि वे गूढ़ आध्यात्मिक सत्य को लोकभाषा और लोकप्रतीकों के माध्यम से अत्यंत सरल बना देते हैं। उनकी कविता केवल पढ़ने की वस्तु नहीं, बल्कि आत्मानुभूति का माध्यम है। आज के भौतिकवादी और अशांत समय में, जब मनुष्य भीतर से रिक्त और बेचैन होता जा रहा है, बाबा की वाणी अमृतधारा की तरह प्रतीत होती है। उनकी रचनाएँ मनुष्य को आत्मचिंतन, भक्ति और आंतरिक जागरण की ओर प्रेरित करती हैं। निस्संदेह ''भिनकराम पदावली'' भोजपुरी संत साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति सिद्ध होगी। मेरे शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तक ''सारण के संत'' में एक अध्याय संत भिनक राम बाबा पर लिखा गया है जिसमें इनके बारे में विस्तृत विवरण है।

प्रोफेसर सूर्यदेव प्रसाद द्वारा संपादित प्रस्तुत ग्रंथ ''भिनकराम पदावली'' शोधार्थियों, साहित्य प्रेमियों तथा अध्यात्म के जिज्ञासुओं के लिए अत्यंत उपयोगी और संग्रहणीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक संत भिनकराम बाबा की महान साहित्यिक और आध्यात्मिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

विषय-सूची

क्रं.	विषय	पृष्ठ संख्या
01.	भिनकराम और उनका काव्य	01—20
02.	भिनकराम—पदावली (संगृहीत एवं संशोधित)	21—69
03.	बारहमासा	70—71
04.	प्रभाती	72—79
05.	होरी	80—83
06.	संदर्भ ग्रथों की सूची	84

प्रो. सूर्यदेव प्रसाद

जन्म	:	०३ जनवरी १९५०
पैतृक गाँव	:	बनसोही
पिता	:	स्व. रघुनाथ प्रसाद उर्फ संतजी
शिक्षा	:	प्रारंभिक शिक्षा खेंढवा एवं सरेयां, उ.वि. महमदा, जगदम कॉलेज, गंगा सिंह कॉलेज एवं राजेन्द्र कॉलेज, छपरा।
अध्यापन	:	०६ अगस्त १९७३ से ३१ जनवरी २०१५ आ.क.उ.वि. छपरा, नंदलाल सिंह कॉलेज, दाउदपुर (सारण) एवं आर.बी.जी.आर. कॉलेज, महाराजगंज (सीवान) जे.पी. आंदोलन में सक्रिय सहभागिता। विभिन्न सामाजिक सेवाओं में योगदान, संत साहित्य में विशेष अभिरूचि, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन।
वर्तमान निवास	:	करहीं खुर्द, सरेयां रोड, बसंतपुर, पो.+थाना-बसंतपुर (सीवान), पिन - 841406 मोबाईल नं.-9852125703

Aditi Publication
Opp. New Panchjanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk, Kushalpur, Dist.- Raipur-492001, Chhattisgarh
shodhsamagam1@gmail.com, +91 94252 10308

ISBN : 978-81-687357-2-9

₹ 151